श्री राम चन्द्र मिशन®
इंडिया न्यूज़लेटर
जनवरी २००८ केवल प्राईवेट परिचालन के लिये वोल्यूम –१, इश्यू –१

प्यारे भाइयों और बहनों

प्रणाम।

इस संवादपत्र के प्रथम संस्करण के जोरदार स्वागत और अनुक्रिया के लिये धन्यवाद। कृपया आप अपने सुझाव इसी तरह भेजते रहिये क्योंकि वे इस संवादपत्र की गुणवत्ता निखारने में अहम भूमिका अदा करते हैं। इस सामयिक अंक की कुछ झलकियां हैं : पूज्य मालिक की हैदराबाद यात्रा, बसंत उत्सव और कोलकता आश्रम पर एक विशिष्ट लेख।

मई 2008 संस्करण के लिये आपकी रचनायें भेजने की अंतिम तिथि 15 अप्रैल,2008 है। कृपया अपनी रचनायें कार्यक्रम की तस्वीर के साथ, अपने ज़ोनल प्रभारी के माध्यम से भेजिये।

आदरसहित
संपादकीय दल

चेन्नई में पोंगल उत्सव

पोंगल दक्षिण भारत का एक प्रमुख त्यौहार है, जो फ़सल की कटाई से संबंधित है तथा सुख समृद्धि का प्रतीक है। इसे यहाँ परम्परागत ढंग से मनाया जाता है। इस दौरान पूज्य मालिक के चेन्नई में होने की उम्मीद से सारे देश से अभ्यासी पोंगल उत्सव मनाने चेन्नई पहुंचे।

पोंगल से एक दिन पहले, मालिक ने सत्संग के बाद दो आडियो सी. डी. जारी किये। पोंगल उत्सव के दिन मालिक ने सत्संग कराया जिसमें लगभग चार हज़ार अभ्यासी उपस्थित थे। शाम को भाई शशांक ने बाँसुरी वादन प्रस्तुत किया जिसे मालिक ने देखा और खूब सराहा।

पूज्य मालिक हैदराबाद में

पूज्य मालिक ने पोंगल उत्सव के बाद कोलकाता और हैदराबाद का दौरा किया। वह १८ से २५ जनवरी तक कोलकाता में और २५ से २८ जनवरी तक हैदराबाद में रहे।

हैदराबाद में पूज्य मालिक टुमकुंटा आश्रम गये जहाँ हज़ारों अभ्यासियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। रविवार २७ जनवरी को मालिक ने सुबह सत्संग के बाद चार विवाह सम्पन्न करवाये तथा बच्चों के सैंटर के लिये आधारशिला रखी। इस मौके पर उपस्थित बच्चों से बातचीत करते हुए मालिक ने उनको अच्छा पढ़ने के लिये, सत्यशील और आज्ञाकारी बनने के लिये एवं सबके प्रति स्नेहमयी होने के लिये प्रेरित किया।

मालिक वहाँ काफ़ी प्रसन्नचित रहे। वहाँ प्रतिदिन करीब एक घंटा अपनी कॉटेज के बाहर अभ्यासियों के संग बैठते तथा सहज मार्ग साधना के कई अहम पहलुओं पर स्पष्टीकरण देते। इस तरह लंबे इंतज़ार के बाद हुए मालिक के इस दौरे में लगभग साढ़े सात हज़ार अभ्यासी सम्मिलित हुये।

श्रद्धेय मालिक २८ जनवरी की शाम को हैदराबाद से चेन्नई वापिस आये और सीधे बाबूजी मैमोरियल आश्रम पहुँचे।

चेन्नई में बसंत

हमारे परम पूजनीय आदि गुरु लालाजी महाराज का जन्मदिवस समारोह मुख्यतः चेन्नई में मनाया गया। १ फ़रवरी को मालिक ने सुबह सत्संग कराने के बाद बारह विवाह सम्पन्न कराये। लगभग साढ़े तीन हज़ार अभ्यासी इसमें शामिल हुये। बसंत उत्सव के दिन मालिक ने सुबह सत्संग कराया जिसमें चार हज़ार से ज़्यादा अभ्यासी, मालिक का सामीप्य पाने के लिये वहाँ एकत्रित हुए। शाम का सतसंग भाई अजय भट्टर ने कराया। उसके बाद बहन प्रियंका रमन ने शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया।

पूज्य मालिक ने स्पाइडरज़ वैब भाग–३ का कन्नड़ रूपांतरण जारी किया। इस मौके पर बैंग्लौर के भाई वाइ. के. विश्वनाथ ने स्पाइडरज़ वैब के तीनो भागों के अनुवाद के काम से नवाज़े जाने के लिये मालिक के प्रति अपना प्रभार व्यक्त किया।

सतकोल २००८ ग्रीष्म जत्थे

हमें यह सूचित करते हुये प्रसन्नता हो रही है कि सतकोल ग्रीष्म जत्थों २००८ (जत्था २२० से २३१) के लिये आवेदनपत्र अब ऑनलाइन http://www.srcm.info/satkhol/satkhol_home.htm क्वार भी उपलब्ध हैं ।

नोट करें कि जो जत्थे सूचित किये गये हैं उनके इलावा किसी और में आवेदन करना सम्भव नहीं होगा । पहले मिलने वाले आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी । अगर आप इंटरनेट पर आवेदन नहीं कर सकते तो अपने केन्द्र के प्रभारी से सम्पर्क करें ।

कृपया आवेदन पत्र भरने से पहले दिशानिर्देश ध्यानपूर्वक पढ़ लीजिये । जिन लोगों के पास इंटरनेट सुविधा नहीं है वे अपने केन्द्र के प्रभारी से सम्पर्क कर सकते हैं । तथा और जानकरी के लिये सतकोल प्रबंध कार्यालय से भी इन नंबरों पर +९१ ४४ २२५२ १०९९ या +९१ ४४ ४२१७ ११११; एक्स्टेंशन २१८, सुबह १० बजे से दोपहर १२ बजे तक और दोपहर ३ बजे से सांय ४.३० के बीच में सम्पर्क कर सकते हैं ।

’ ही द हुक्का एंड आई’

बहुत से अभ्यासियों के निवेदन पर तथा पूज्य मालिक की स्वीकृति से इस डी.वी.डी के दूसरे चरण का निर्माण कार्य चल रहा है । नया संगृह मिलने के तुरंत बाद इसका वितरण आरम्भ हो जायेगा ।

जो अभ्यासी इस विशिष्ट प्रकाशन के लिये अग्रिम राशि देना चाहते हैं कृपया अपने स्थानीय केन्द्र समन्वयक से सम्पर्क करें । अतिरिक्त जानकारी के लिये इस पते पर ई मेल करें

’ही द हुक्का एंड आई’ हिंदी भाषा में

’ही द हुक्का एंड आई’ को हिंदी भाषा में अनुवाद करके पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है ताकि हिंदी भाषा बोलने वाले अभ्यासी इसका लाभ उठा सकें । चूंकि यह एक विशिष्ट प्रकाशन है, इस लिये यह पुस्तक आजीवन सदस्यों को नहीं दी जायेगी ।

इस पुस्तक की कीमत २०० रूपये है और इसके लिये अग्रिम राशी जमा कराने की अंतिम तिथि ३० अप्रैल, २००८ है । जो अभ्यासी मई १, २००८ को या उसके बाद अदा करेंगे उनके लिये पुस्तक की कीमत ३०० रूपये होगी ।

पूजनीय मालिक का ८१वां वर्षगांठ उत्सव

लखनऊ, यू.पी., भारत, जुलाई २३,२४ व २५, २००८

हमें एक बार फ़िर लखनऊ शहर में इस आनंदपूर्ण अवसर को मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जहाँ हम अपने पूजनीय मालिक की ८१वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर को मनाने के लिये एकत्रित होंगे तथा उनकी भौतिक एवं दिव्य छटा में रहने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे ।

समारोह समिति समस्त विश्व के अभ्यासियों की तरफ़ से हमारे प्रिय मालिक का धन्यवाद करती है कि उन्होंने हमें अपनी आलौकिक उपस्थिति में सराभौर होने का यह अद्भुत अवसर प्रदान किया तथा आशा करती है कि हम सब इस उत्सव में शामिल होंगे ।

ढाह समारोह श्री राम चंन्द्र मिशन (एस आर सी एम) और सहज मार्ग स्पिरिचुएलिटी फ़ाऊंडेशन (एस एम एस एफ़) के तत्त्वावधान में हो रहा है । सभी अभ्यासी भाई और बहन इस विशिष्ट उत्सव में उपस्थित होने तथा पूज्य मालिक के प्रेम एवं ईश्वरीय अनुकम्पा में सम्मिलित होने के लिये आमंत्रित हैं।

स्नेहपूर्वक
समारोह समिति के सदस्य

नई एम पी ३ सी डी जारी

हाल ही में निम्नलिखित दो एम. पी. ३ सी. डी. का विमोचन किया गया है। वे दृश्य श्रव्य साहित्य–समग्र (ऑडिओ वीडिओ कॉर्पस) सदस्यों को उनके केन्द्र समन्वयक से मिलेगी ।

उन्हें बाबूजी मैमोरियल आश्रम, मण्णपाकम, चेन्नई के पुस्तक भंडार से या अपने केन्द्र समन्वयक/प्राभारी के माध्यम से भी खरीद सकते हैं ।

१. (क्लेक्टेड टॉक्स ऑफ़ द मास्टरज़ एम पी ३ सीरीज़) मालिक के व्याख्यानों का संगृह ऐम पी ३ श्रृंखला–भाग ५, १९८९ पूज्य श्री पी. राजगोपालाचारी जी द्वारा दिये गए व्याख्यानों की कालक्रम श्रृंखला का यह अगला क्रम है । इस में मालिक के १९८९ में भारत, यूरोप तथा अमेरिका दौरे के दौरान दिये गये २७ व्याख्यान हैं ।

२. हार्ट स्पीक (Heart Speak) दिल की बात २००५ इस में पूज्य मालिक के २००५ में भारत और यू.ए.ई. तथा डेनमार्क दौरे के दौरान दिये गये २२ व्याख्यान हैं ।

कॉन्स्टेन्ट रिमेम्ब्रेंस – जनवरी २००८

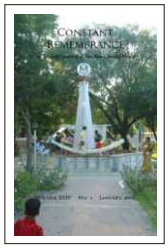

हाल ही में कॉन्स्टेन्ट रिमेम्ब्रेंस के साल २००८ का पहला संस्करण जारी किया गया तथा अभी यह आजीवन सदस्यों को वितरित किया जा रहा है ।

नैवेली में – ओपन हाऊस का आयोजन

एैवेली में नैवेली लिग्नाइट कार्पोरेशन (बिजली आपूर्ति करने वाली कंपनी) स्थित है जो कि इस क्षेत्र में उपलब्ध कोयले की खान से तमिलनाडू के बृहत् क्षेत्र के लिये बिजली का उत्पादन करती है । नैवेली टाऊन एन.एल.सी के १८००० कर्मचारियों व उनके परिवारों का आवासीय क्षेत्र है ।

नैवेली कॉलोनी में रहने वाले परिवार स्थानीय सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं । इस कॉलोनी में गत कुछ वर्षों में इन गतिविधियों के अलावा धार्मिक व आध्यात्मिक गतिविधियों की भी हलचल दिखाई दी है ।

नैवेली के रामचन्द्र मिशन केन्द्र में रविवार का सत्संग एक स्कूल में आयोजित होता है जिसमें लगभग ५० अभ्यासी सम्मिलित होते हैं ।

शनिवार २६ जनवरी २००८ को तेलुगू–समिति में ओपन हाऊस का आयोजन किया गया जिसमें अभ्यासियों के मित्र व रिश्तेदारों को आमंत्रित किया गया । भाई सी. राजगोपालन ने तमिल में ५० मिनट के व्याख्यान में सहज मार्ग पद्धति व इसके विशिष्ट पहलुओं जैसे कि सफ़ाई, प्राणाहूति और गुरु की भूमिका व सहायता पर प्रकाश डाला । इस सत्र में आमंत्रित लोगों ने अभ्यासी के जीवन में सहज मार्ग की प्रासंगिकता व उपयोगिता के विषय पर विभिन्न प्रश्न पूछे, जिनका भाई राजगोपालन ने सहज मार्ग में दृढ़ विश्वास एवं अभ्यास के परिपक्व अनुभव के आधार पर संयम और सूझबूझ से समाधान दिया। लोगों की सक्रिय सहभागिता से स्पष्ट होता है कि सहज मार्ग के परिचय व इस पद्धति की विशेषताओं को कितना ग्रहण किया । इस सत्र में सम्मिलित ६० लोगों में से ४० लोगों ने उसी दिन शाम को सहज मार्ग का अभ्यास आरम्भ करने के लिये पहली पूजा ली । यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि सभी व्यक्तियों ने रात्रि भोजन के बाद पहली पूजा लेने के लिये देर रात्रि तक अपनी बारी आने का इंतज़ार किया । नैवेली में सुनियोजित ढंग से आयोजित ओपन हाऊस में लोगों से प्राप्त सक्रिय प्रतिसाद से हम आश्वस्त हैं कि कैसे जिज्ञासु हृदय आध्यात्मिक वातावरण के लिये लालायित हैं व सहज मार्ग पद्धति इन आध्यात्मिकता का लाभ उठाने के लिये लालायित जिज्ञासु हृदयों को ज्ञान के प्रकाश से दमक देगी ।

श्रीराम राघवेन्द्रन , चेन्नई

जीवन–मूल्यों पर आधारित आध्यात्मिक–शैक्षणिक कार्यक्रम

एयर फ़ोर्स स्कूल बैंगलूर (२००६–२००८)

जीवन–मूल्यों पर आधारित आध्यात्मिक शिक्षा कार्यक्रम आयोजित करने वाली टीम ने बैंगलूर में कई स्कूलों में इन एक दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन किया । इस कार्यक्रम की सफ़लता के बाद विभिन्न स्कूलों में लम्बी अवधि के VBSE कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बनाई गई जिसमें शिक्षकों व विद्यार्थियों का सक्रिय योगदान हो ।

बैंगलूर के एयर फ़ोर्स स्कूल के शिक्षक,जो कि रामचन्द्र मिशन के अभ्यासी भी हैं,उनकी पहल पर वर्ष २००६ में मूल्य–आधारित आध्यात्मिक शिक्षा कार्यक्रम आरंभ किया गया । इस स्कूल में एक परिचयात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया व तत्पश्चात शैक्षणिक वर्ष २००६–२००७ के लिये प्राइमरी की तीसरी से पांचवी कक्षा के लिये यह कार्यक्रम आरंभ किया गया । यह निर्णय लिया गया कि आरंभ के ३–४ माह तक अभ्यासी इस कार्यक्रम के सत्र को चलाएंगे व तत्पश्चात स्कूल के शिक्षकों को बाकी सत्र चलाने के लिये कहा जायेगा। सहज मार्ग अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान द्वारा तैयार किये गये मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा की पुस्तकें, प्रशिक्षण कराने के लिये भी संदर्भ पुस्तकें होंगी तथा प्रत्येक कक्षा में वॉलेन्टियर के साथ शिक्षक प्रेक्षक के रूप में आमंत्रित होगा ।

इस कार्यक्रम में कक्षाओं में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम को उदाहरणों व विभिन्न क्रिया–कलापों के समावेश करके रोचक बनाया गया। बच्चों को स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ व उन्होंने इन पाठ्यक्रमों का भरपूर आनंद उठाया गया। सत्र के चार माह की समाप्ति पर विद्यार्थियों ने मूल्य आधारित विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की जिसमें विभिन्न विषयों का प्रतिपादन किया गया । अगले शैक्षणिक वर्ष २००७–२००८ के लिये मूल्य आधारित आध्यात्मिक शिक्षा कार्यक्रम छठी से दसवीं कक्षा के लिये ३ माह की अवधि के लिये चलाया गया । इस कार्यक्रम में कक्षायें लेने के उपरांत शिक्षकों को भी इन पाठ्यक्रमों को सिखाने को कहा गया जिससे वे भी प्रशिक्षित हो सकें। इन कक्षाओं में छात्रों के साथ चर्चाओं के अलावा विभिन्न गतिविधियों के आयोजन पर भी बल दिया गया ।

शैक्षणिक वर्ष की समाप्ति पर विशेष रूप से माता–पिता और अभिभावकों के लिये एक सत्र आयोजित किये जाने की योजना है जिसमें उन्हें स्कूलों में प्रारम्भ किये गये कार्यक्रमों से अवगत करवाया जायेगा।

ओपन हाउस सत्र

चंदना गांव – रामपुर से १४० कि. मी. की दूरी पर स्थित चंदना गांव में २५ दिसम्बर, ०७ को ओपन हाउस का आयोजन किया गया। यह एक दूरस्थ क्षेत्र में बसा गांव है व इसमें सहज मार्ग के अभ्यासी नहीं हैं। ओपन हाउस में कुल ४० व्यक्तियों ने भाग लिया। जिनमें से ३९ व्यक्तियों ने सहज मार्ग को अपनाकर ध्यान आरंभ किया।

चंदना गांव से २० कि. मी. की दूरी पर स्थित बसाना गांव में भी २५ दिसम्बर,०७ को लोगों के समूह ने ओपन हाउस में भाग लिया। इनमें से छः व्यक्तियों ने सहज मार्ग पद्धति से ध्यान आरंभ किया।

बिलासपुर केन्द्र – बिलासपुर केन्द्र में १ दिसम्बर, ०७ को ओपन हाउस का आयोजन किया गया। ओपन हाउस के उपरांत छः व्यक्तियों ने सहज मार्ग पद्धति को अपनाया।

राजम – विशाखापटनम के पास राजम गांव में स्थानीय वकीलों के लिये ओपन हाउस का आयोजन किया गया। इनमें ४३ वकील सम्मिलित हुए।

तुनी – विशाखापटनम के पास तुनी गांव में भी ओपन हाउस का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय व्यापारियों के अलावा ६० प्रतिभागी उपस्थित हुए।

करनूल – स्थानीय इंजीनियरिंग कॉलेज के गर्ल्ज़ होस्टल में ओपन हाउस का आयोजन किया गया। इसमें १८० लोग सम्मिलित हुए।

मंदामर्री – युवाओं के लिये ओपन हाउस का आयोजन किया गया। इसमें ४३ लोग उपस्थित हुए।

करीमनगर – रागाडू में सरसिल्ला मंडल में आयोजित ओपन हाउस में ४५ गांव के लोगों ने भाग लिया।

गोदावरीखानी – स्थानीय शिक्षकों के लिये ओपन हाउस का आयोजन किया गया। इसमें २० शिक्षकों ने भाग लिया।

अनंतपुर – इस क्षेत्र में भी ओपन हाउस का आयोजन किया गया।

डॉक्टर स्वंय–सेवकों की सेवाओं के लिये अनुरोध (केवल **Allopathy** के लिये)

नि:शुल्क मेडिकल सेन्टर, बाबूजी मेमोरियल आश्रम, मणापाक्कम, चेन्नई

टाबूजी मेमोरियल आश्रम में वर्ष १९९९ में मेडिकल सेन्टर स्थापित किया गया। १४ जनवरी, २००५ में आश्रम परिसर में प्रशासनिक ब्लॉक के खुले क्षेत्र में इसे शिफ़्ट किया गया है। मेडिकल सेन्टर में मिशन के अभ्यासियों के अलावा मणापाक्कम के निकट इलाके के लोगों को भी नि:शुल्क चिकित्सा उपलब्ध करवाई जाती है। इस केन्द्र में प्रत्येक दिन लगभग १०० रोगी चिकित्सा हेतु आते हैं।

मेडिकल सेन्टर में स्वंय–सेवक अभ्यासियों की निरंतर आवश्यकता है। इन स्वंय–सेवकों को नि:शुल्क मेडिकल सेन्टर के प्रकार्य और क्रियाकलापों से अवगत करवाने के लिये ओरियन्टेशन कार्यक्रम आयोजित किया जाता है ; जो कि अभ्यासियों को अपने केन्द्रों में इस तरह के केन्द्र चलाने में भी सहायक होगा। इस क्षेत्र के व्यावसायियों के समक्ष समय की उपलब्धता की समस्या को ध्यान में रखकर निर्णय लिया गया है कि वे आश्रम में आकर रह सकते हैं तथा न्यूनतम पन्द्रह दिन व अधिकतम एक माह के लिये मेडिकल सेन्टर में अपनी सेवाएं प्रदान कर सकते हैं।

स्वंय–सेवकों के लिये निम्नलिखित नियम तय किए गए हैं :

१. सहज मार्ग पद्धति में ध्यान करते हुये कम से कम दो वर्ष पूरे किये गये हों।

२. अभ्यासी को आश्रम में रहने की व्यवस्था प्रदान की जायेगी व उन्हें अपनी यात्रा के खर्च उठाना होगा।

३. प्रत्येक सेवा–काल को दो हिस्सों में विभाजित किया गया है, तथा इच्छुक अभ्यासी अपने संक्षिप्त जीवन–वृत्त (बायो–डेटा) (जिसमें उसका नाम, पता , अर्हता, सम्पर्क ब्यौरा, व्यावसायिक अनुभव तथा ई–मेल आई. डी. शामिल होगा) के साथ सेवा–काल चयन का [illegible] विकल्प देंगे।

४. आश्रम में ठहरने की अवधि में वे आश्रम प्रबंधक के दिशा–निर्देशों पर कार्य करेंगे तथा उन्हें केवल नि:शुल्क मेडिकल सेन्टर में ही सेवायें देने का आग्रह होगा।

५. अभ्यासी अपने आवेदन प्रस्तुत करते समय स्पष्ट रूप से उल्लेख करें कि वे माह के किस अवधि यानि पहली अथवा दूसरी पाक्षिक अवधि में सेवायें देने को इच्छुक हैं।

हम इन कार्यक्रमों को अप्रैल,२००८ से आरंभ करने का विचार कर रहे हैं। इन कार्यक्रमों से संबंधित उत्तर / आवेदन / किसी भी तरह की पूछताछ निम्नलिखित पते पर भेजें :–

डॉ. यू. रविन्द्रन
संयोजक, नि:शुल्क मेडिकल सेन्टर,ल्ल्ल्ल
बाबूजी मेमोरियल आश्रम, मणापाक्कम, चेन्नई–१६
फ़ोन – ४२१७१९९१/९३८२८७७९७४ (मोबाइल)
ई. मेल. – druravindran@gmail.com

"कार्य के संबंध में एक रहस्य है कि कार्य सौंपा नहीं जाता अपितु इसे स्वेच्छा से स्वीकार किया जाता है। मुझे याद नहीं कि मालिक ने कभी भी किसी को बुला कर कार्य करने को कहा हो। परन्तु जब कोई भी कार्य करने की इच्छा लिये आगे आये हैं तो मेरे मालिक द्वारा उसे कार्य के अलावा कार्य करने की क्षमता भी प्रदान की गई है। अगर वह कार्य के प्रति समर्पित होकर संलग्न रहा तो उसे और अधिक महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया। मैं पुन: दोहराता हूँ कि आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्य का यही रहस्य है।"

पी. राज्गोपालाचारी,
आध्यात्मिक ज्वाला, मकड़ी का जाला, वोल्युम–२, पृष्ठ–३४१.

वसन्त उत्सव

श्री रामचन्द्र मिशन के सभी केन्द्रों में आदि गुरु श्रद्धेय लालाजी महाराज का जन्मदिवस अत्यन्त भक्तिभाव व प्रेम से मनाया गया। वसन्त उत्सव के अवसर पर सुबह–शाम सत्संग रखा गया था। सुबह सत्संग उपरांत कई कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसके उपरांत श्रद्धेय लालाजी महाराज की जीवनी पर चर्चायें व वर्तायें हुईं। 'वे, हक्का और मैं' के रिकार्ड चलाने के अतिरिक्त भजन गायन आदि गतिविधियाँ भी आयोजित हुईं।

उ. प्रदेश के गोला गोलखनाथ के आश्रम में रसोई ब्लॉक का उद्घाटन उत्सव के पवित्र वातावरण में किया गया। इस उत्सव के उपरांत एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में ४२ केन्द्रों के ४०० अभ्यासियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने अपनी प्रशंसात्मक व सराहना पूर्व प्रतिक्रिया दी है।
इन्दौर केन्द्र के आसपास के उप केन्द्र, महु, देवास, नरमदा नगर, सांवर, धर, मंडू के ५०० अभ्यासी ने उत्सव में भाग लिया। चायपान के कार्यक्रम के बाद बच्चों ने, संत मीरा बाई की जीवनी पर आधारित संगीतमय नाटक प्रस्तुत किया।

वसन्त उत्सव में सभी सम्मिलित अभ्यासियों ने समारोह स्थल पर एक दिव्य व पवित्र वातावरण की अनुभुति की तथा उत्सव से विदा लेते हुए उनके हृदय पू. मालिक के प्रति कृतज्ञता व प्रेमभाव से परिपूर्ण थे।

विकल्प, शेखर राय, प्रभात कुमार

पैठण केंद्र में ध्यान कक्ष का उदघाटन

पैठण केंद्र के एक अभ्यासी ने अपने घर में श्री रामचन्द्र मिशन के केंद्र हेतु ध्यान –कक्ष उपलब्ध करवाया है। १, फरवरी, २००८ को सत्संग के साथ इस स्थल का उद्घाटन हुआ।

पैठण महाराष्ट्र के गोदावरी तट पर बसे औरंगाबाद के दक्षिण में ५६ कि. मी. की दूरी पर बसा है। पैठण का न केवल ऐतिहासिक महत्व है अपितु इस भूमि पर कई संतों का भी जन्म हुआ है। मराठी कवि एकनाथ महाराज, संत भानुदास व मुक्तेश्वर की जन्म भूमि भी पैठण है। औरंगाबाद सडक़ मार्ग पैठण से जुड़ा है। शहर से ध्यान–कक्ष १ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। ध्यान–कक्ष में करीब ८० अभ्यासियों की बैठने की क्षमता है। महाराष्ट्र के ज़ोनल केन्द्र प्रभारी भाई श्री स. व. वैद्य ने यहाँ ध्यान कक्ष में पहला सत्संग कराया। इसके उपरांत "अभ्यासियों की केन्द्रों के विकास में भूमिका" पर वार्तायें हुईं। भाई श्री स. व. वैद्य ने अपनी इच्छा प्रकट की, कि भविष्य में यहाँ पर सहज नगर का विकास होना चाहिए।

युवाओं के लिए, सेवाश्रम नई दिल्ली में कार्यशाला का आयोजन

एई दिल्ली केन्द्र मे युवाओं के लिए १२, जनवरी, २००८ को आंतरिक जागृति पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का आरंभ 'अभ्यासी के जीवन में आध्यात्मिक्ता की प्रासंगिकता व समर्थ गुरु की अभ्यासी में आंतरिक जागृति लाने में भूमिका'।

विषय पर दी गई वार्ता से हुआ। इस कार्यशाला में अन्य जिन विषयों पर वार्तायें हुईं इनमें "पू. मालिक, अभ्यासी के हृदय परिवर्तन द्वारा व उनके चरित्र निर्माण के प्रति जागृति लाकर संपूर्ण जीवन को नई दिशा देतें हैं" यह विषय भी शामिल था। अभ्यासियों को वर्गों में बाँटकर उन्हें दिए गए विषय पर विचार प्रकट करने को कहा गया। इस कार्यशाला में प्रश्नोत्तरी सत्र भी रखा गया व इसके उपरांत 'ट्रेशर हन्ट' का भी आयोजन हुआ। कार्यशाला का रोचक कार्यक्रम सहज मार्ग पद्धति पर बनी पहेलियाँ थीं। कार्यशाला अत्यंत उत्साह वर्धक थी व नई दिल्ली के युवाओं को इस कार्यशाला से सहज मार्ग पद्धति में ध्यान सही ढंग से करने का अनुभव/अवसर प्राप्त हुआ।

विजय विठ्ठल, नई दिल्ली

SRCM

इंडिया न्यूज़लेटर

जनवरी २००८ केवल प्राईवेट परिचालन के लिये वोल्यूम –१, इश्यू –१

“प्रकाश के केन्द्र” बाबूजी मेमोरियल आश्रम, कोलकता

“मिशन विश्व के कोने–कोने पर अपने केन्द्र सथापित कर प्रगति की दिशा पर अग्रसर है। कोलकता आश्रम, की स्थापना भी प्रगति की दिशा में एक उपल्ब्धि है। वास्तु कला की दृष्टि से भव्य वृताकार भवन की निर्मिती हो परन्तु अगर इसमें उच्चतम चेतना का आभास न हो तो ऐसी ईमारतें केवल ईंट–गारें से निर्मित खोखले ढाँचे हैं। आश्रम ऐसे स्थान होतें है जहाँ हम आश्रय पातें है व आध्यात्मिक जीवन पर चलने वालों को शाँति व सुकू न का पवित्र वातावरण मिलता है तथा जहाँ हम उच्चतम चेतना से मौन आंतरिक संपर्क स्थापित करतें है “

यह अनुच्छेद कोलकता के भाई श्री अजय भट्ट्र द्वारा दिए गए भाषण से उद्धरित अंश है। यह आश्रम ईंट–गारें के आलावा अभ्यासियों के भक्तिभाव से सिंचित जल से निर्मित हुआ है। पू. मालिक ने इस आश्रम की नीव १७, मार्च, २००० में रखी परन्तु इसका निर्माण कार्य १५, नवंबर, २००३ को पूर्ण हुआ। इसका उद्घाटन पू. मालिक द्वारा २५, दिसंबर, २००३ को हुआ।

आश्रम शहर के पूर्वी हिस्से में रुबी अस्पताल के पीछे स्थित है। यह विमान स्थल से ३ कि. मी. व रेलवे स्टेशन से २१ कि. मी. की दूरी पर स्थित है। आश्रम का माप ४८००० वर्ग फीट है। आश्रम की दो इमारतें है जिनमे प्रशासनिक कक्ष, रसोई ग्राउंड फ़्लोर पर, और रसोई के ठीक सामने

भोजनशाला बनी है। ध्यान –कक्ष भी परिसर में बनी इमारत का हिस्सा है। ध्यान कक्ष के ठीक नीचे अभ्यासी भाई–बहनों के लिए ड्रारमीटरी एवं शौच आदि की व्यवस्थता की गई है। हाँलाकिं अन्य आश्रमों की तुलना में यह आश्रम अधिक बड़ा नहीं है किन्तु संपूर्ण परिसर के क्षेत्र का सही तरीके से नियोजन हुआ है तथा इसकी ईमारतों के ईर्द–गिर्द हरी घास का लॉन है तथा लॉन के एक हिस्से में बच्चों के खेलने के लिए क्रीड़ा–स्थल व बास्केट–बाल कोर्ट बनाया गया है।

आश्रम में प्रवेश हेतु दो द्वार हैं। एक प्रवेश द्वार सीढ़ियाँ चढकर व दूसरा द्वार रेंप द्वारा पहुँचा जा सकता है। यह मिशन के एम्बलम पर बने मार्ग का प्रतीक है जो कि पर्वत के दुगर्म पथ और बाधाओं से होकर गुज़रता है। प्रत्येक पग पर उंचाई की ओर ले जाते हुए हमें अपने लक्ष्य के उच्चतम बिंदु पर पहुँचाता है। इस आश्रम में मास्टर काटेज बहुत सुरुचिपूर्ण रुप से बनाया गया है। पू. मालिक के पहली मंज़िल में बने विश्राम कक्ष से सटकर बाल्कनी है। पू. मालिक इस जगह से अभ्यासी भाई–बहनों को अपने दर्शन का लाभ करातें हैं।

पू. मालिक बरामदे में बैठकर बातचीत करतें है। ध्यान कक्ष के सामने बने लॉन में हाल ही में पू. बाबूजी महाराज का संगमरमर से बना पुतला स्थापित किया गया। यह पू. मालिक द्वारा अपने पू. बाबूजी महाराज को भावभीनी श्रद्धांजली भी है।

पू. मालिक के शब्दों में “मिशन के बदलते चरणों का प्रत्यक्ष उदाहरण कोलकता मे निर्मित आश्रम है। हमारा मिशन इन प्रकाश के केंन्द्रों से संपूर्ण धरा पर प्रकाशमान होगा और जिसे छुपाया न जा सकेगा।”

न्यूज़ लेटर की सदस्यता प्राप्त करने के लिए **http://www.srcm.org/centers/as/in/newsletter/index.jsp** पर संपर्क करें। अपने सुझाव प्रतिक्रियाओं व लेख ईमेल द्वारा इस पतें पर भेजें **in.newsletter@srcm.org**

© 2008 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
“Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", “SRCM”, “Constant Remembrance” and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.
This message may be edited for content and is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed herein are not necessarily those of SRCM. Privacy Statement: http://www.srcm.org/members/privacypolicy.jsp